द्वारा

डॉ. आशीष सिसोदिया

सह आचार्य

भाषा विज्ञान का अन्य विधाओं से सम्बन्ध -

 ज्ञान अखण्ड है। उसका अनेक तथाकथित विज्ञानों, ज्ञानों या विषयों से सम्बन्ध व्यावहारिक है। अनेक अध्ययन विश्लेषण की सुविधा के लिए तात्विक दृष्टि से ज्ञान को विभाजित नहीं किया जा सकता। ज्ञान की इस अविभाजितता के कारण ही सारे ज्ञान-विज्ञान एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं।

 1. भाषाविज्ञान व व्याकरण - भाषा विज्ञान और व्याकरण दोनों में ही भाषा का अध्ययन किया जाता है अतः भाषा विज्ञान का सम्बन्ध व्याकरण से ही सर्वाधिक है। यह सम्बन्ध इतना अधिक है कि कभी-कभी तो एक-दूसरे की सीमा में चला जाता है। यों दोनों में भेद स्पष्ट है। व्याकरण शास्त्र है। उसमें इस बात के निर्देश पर बल रहता है कि अमुक रूप शुद्ध है और इसी का प्रयोग भाषा में होना चाहिए। दूसरी तरफ भाषा विज्ञान विज्ञान है और उसमें शुद्धि-अशुद्धि के विचार पर बल नहीं होता। भाषा विज्ञान भाषा में जो कुछ भी है, जैसा भी है, उसका अध्ययन-विश्लेषण करता है। वह व्याकरण की तरह शुद्ध भाषा के लिखने-बोलने का अवसर नहीं देता है। व्याकरण ’ऐसा होना चाहिए‘ कहता है, जबकि भाषा विज्ञान ’ऐसा है‘ और ’ऐसा नहीं है‘ कहता है। दूसरे व्याकरण किसी एक भाषा का होता है जबकि भाषा विज्ञान में भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। यह वैज्ञानिक अध्ययन किसी एक भाषा का भी हो सकता है और सामान्य रूप से भाषा का भी। भाषा विज्ञान व्याकरण द्वारा प्रस्तुत सामग्री का उपयोग करता है तथा व्याकरण द्वारा निर्देशित अनेक नियमों के कारण तथा इतिहास आदि की व्याख्या करता है, इसीलिए भाषा विज्ञान को व्याकरण का भी व्याकरण कहा जा सकता है। अध्ययन-विश्लेषण के आधार पर नियम निर्धारण करना भाषा विज्ञान का कार्य है। जीवित भाषा में परिवर्तन के विश्लेषण के आधार पर व्याकरण को बदलना होता है। भाषा विज्ञान तथा व्याकरण के साम्य-वैषम्य को इस प्रकार समझा जा सकता है -

 साम्य - (1) दोनों के अध्ययन का आधार भाषा है। (2) दोनों के ऐतिहासिक, तुलनात्मक और समकालीन तीन भेद हो सकते हैं। (3) भाषा की उत्पत्ति, विकास, बनावट, विकृति का अध्ययन भाषा विज्ञान करता है तो इसके निकट ही व्याकरण उनके शुद्ध स्वरूप और बनावट पर प्रकाश डालता है।

वैषम्य - (1) भाषा विज्ञान का कार्य भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करता है, तो व्याकरण का कलात्मक। (2) भाषा विज्ञान ’क्या है‘ और ’क्या नहीं है‘ का तथ्यात्मक अध्ययन करता है तो व्याकरण ’ऐसा होना चाहिए‘ का। (3) भाषा विज्ञान का क्षेत्र कालातीत होकर विस्तृत है तो व्याकरण का संकुचित। (4) एक का कार्य नियम निर्धारण है तो दूसरे का भाषा का परिमार्जन व परिष्करण। (5) व्याकरण भाषा विज्ञान का अनुगामी है। (6) भाषा विज्ञान भाषा की रचना, वाक्य गठन, ध्वनि, अर्थ, शब्द समूह, लिपि आदि सभी का अध्ययन करता है, जबकि व्याकरण का प्रमुख विषय भाषा की रचना व वाक्य गठन ही है।

2. भाषा विज्ञान व साहित्य - भाषा अभिव्यक्ति का साधन है और साहित्य मानव की सुन्दरतम अभिव्यक्ति का भण्डार है। साहित्य का आधार भाषा है और भाषा का सुरक्षित रूप साहित्य में ही मिलता है। इस तरह भाषा और साहित्य दोनों सम्बद्ध है तो फिर भाषा का विज्ञान साहित्य से असम्बद्ध कैसे रह सकता है ? साहित्य के कथ्य और अभिव्यक्ति दोनों ही पक्षों का अध्ययन भाषा-विज्ञान करता है। ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान तो पूर्णतया साहित्य पर ही आधारित है। उसी भाषा का ऐतिहासिक अध्ययन संभव है जिसमें प्राचीन साहित्य हो, दूसरी ओर साहित्य भी भाषा विज्ञान से काफी सहायता लेता है। भाषा में परिवर्तन होते-होते अनेक शब्दों या रूपों में इतना ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाता है कि उन्हें पहचानना कठिन हो ता है। भाषा विज्ञान अपने ध्वनि नियमों के आधार पर उनके मूल रूप को पहचानता है। पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य की रूप या शब्द विषयक अनेक गुत्थियों को अनेक रूप में भाषा विज्ञान ने सुलझाया है। इस प्रकार अनेक शब्दों के अर्थ भी बदल जाते हैं जिनकी ठीक जानकारी में भाषा विज्ञान सहायक होता है।

इसी प्रकार प्राचीन साहित्य अपने अर्थ निर्धारण में भाषा विज्ञान से अमूल्य सहायता लेता है। प्राचीन साहित्य के शुद्ध पाठ निर्णय में भी भाषा विज्ञान से सहायता मिलती है। इधर अपनी गणितीय शाखा के द्वारा भाषा विज्ञान इस बात के निर्णय में भी साहित्य की सहायता कर रहा है कि अमुक पुस्तक अमुक लेखक की है या नहीं। जैसे - रामचन्द्रिका केशवदास की है या नहीं।

3. भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण - भाषा विज्ञान द्वारा भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन होता है और भाषा शिक्षण का सम्बन्ध मातृभाषा या अन्य भाषा के शिक्षण से है। इस प्रकार दोनों प्रत्यक्षतः भाषा के अध्ययन और अध्यापन से सम्बद्ध होने के कारण आपस में सम्बद्ध हैं। यह बात सर्वमान्य हो चुकी है कि भाषा शिक्षण भाषा विज्ञान की सहायता के बिना अपेक्षित रूप से संभव नहीं है। भाषा शिक्षण के लिए स्तरीय पाठ्यपुस्तकें भाषा विज्ञान की सहायता से ही बनाई जाती हैं। भाषा विज्ञान की ध्वनि विज्ञान शाखा से ठीक उच्चारण सिखाने में, रूप विज्ञान और वाक्य विज्ञान से व्याकरण को ठीक हृदयंगम कराने में तथा शब्द-विज्ञान से स्वीकृत शब्दावली द्वारा भाषा सीखने वालों के शब्द-समूह में अपेक्षित वृद्धि एवं सुधार कराने में बड़ी सहायता ली जा रही है।

4. भाषा विज्ञान और समाज विज्ञान - भाषा समाज की देन है तथा समाज में ही इसका प्रयोग होता है। अतः इन दोनों विज्ञानों का सम्बन्ध स्पष्ट है। अब तो इस सम्बन्ध को इतनी स्वीकृति मिल गई है कि भाषा विज्ञान की एक नई शाखा समाज भाषा विज्ञान के रूप में विकसित हो गई है। भारतीय भाषाओं में चाचा, मामा, फूफा, मौसा जैसे शब्द हैं, किन्तु यूरोपिय भाषाओं में नहीं हैं। क्यों ? इसका उत्तर समाज विज्ञान ही देता है। संस्कृत में मौसा और फूफा जैसे शब्द नहीं थे किन्तु हिन्दी में हैं। इसका भी कारण सामाजिक है। भाषा में प्रयोगों के विभिन्न स्तर आदरार्थ (आप) सामान्य (तुम) अनादरार्थ (तू) मूलतः समाज से ही सम्बद्ध हैं, अतः उनका अध्ययन भाषा विज्ञान समाज विज्ञान के बिना नहीं कर सकता। समाज परिवर्तनशील है और उसका परिवर्तन भाषा में भी परिवर्तन के रूप में फलित होता है।

5. भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान - मनोविज्ञान मन के अध्ययन का विज्ञान है और भाषा विज्ञान उस भाषा के विज्ञान का अध्ययन करता है, जो मनोगत भावों और विचारों को व्यक्त करते हैं। मन ही वस्तुतः भाषा के मूल में है। बाह्य जगत् के मन पर पड़े हुए प्रभावों की उच्चरित प्रतिक्रिया ही भाषा है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। दोनों के सम्बन्धों की स्वीकृति के फलस्वरूप ही भाषा विज्ञान की एक नई शाखा आज विकसित हो गई है जिसे मनोभाषाविज्ञान कहते हैं। भाषा का चिन्तन पक्ष तो मनोविज्ञान से और भी अधिक जुड़ा है। भाषा के अनेक परिवर्तन चाहे वे ध्वनि, अर्थ, शब्द, रूप किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो व्यक्ति या समाज के मनोविज्ञान को व्यक्त करता है।

1947 के पूर्व कांग्रेस का समाज में जो आदरपूर्ण अर्थ था उसके बाद नहीं रहा। नेता, खद्दरधारी आदि और भी शब्दों की यही गति हुई। इस अर्थ परिवर्तन के पीछे समाज का मनोविज्ञान है। समाज का बाह्य गठन भी भाषा-भाषियों के मनोविज्ञान से ही सम्बद्ध है। दूसरी तरफ मनोविज्ञान भी भाषा विज्ञान से सहायता लेता है। किसी के भी मानस का अध्ययन उसके द्वारा उच्चरित वाक्यों के विश्लेषण के आधार पर ही संभव है। पागलों के उपचार में तो मनोविज्ञान भाषा विज्ञान की विशेष सहायता लेता है। उनके प्रलाप का विश्लेषण ही उनकी मानसिक त्रुटियों को सामने लाता है, जिसके कारण वह पागल हो जाता है।

6. भाषाविज्ञान एवं मानव विज्ञान - भाषा का प्रयोग मनुष्य करते हैं और मानवविज्ञान मनुष्य का विज्ञान है। इस तरह दोनों एक-दूसरे से काफी सम्बद्ध हैं। मनुष्य का जैसे-जैसे विकास हुआ भाषा भी अभिधात्मकता से व्यंजनात्मकता की ओर पहुँच गई है। अनेक प्रकार के अंध विश्वासों के कारण असंस्कृत लोगों की भाषा में अनेक उल्टे-सीधे प्रयोग चल पड़ते हैं या कुछ शब्दों का प्रयोग सर्वदा के लिए या कुछ काल में विशेष शब्दों का प्रयोग वर्जित समझते हैं। जैसे - कहीं-कहीं लोग साँप को ’रस्सी‘ कहते हैं, लाश को मिट्टी या दुकान बंद करने को दुकान बढ़ाना कहते हैं। चेचक को माता निकलना कहना भी अंधविश्वास है। भाषा विज्ञान को इस प्रकार की सामग्री मानव विज्ञान से मिलती है। दूसरी ओर मानव विज्ञान भी भाषा विज्ञान की सहायता से अनेक जातियों की भाषा के विश्लेषण के आधार पर उनके पुराने अंधविश्वासों का पता लगाता है। अशोक को वामारिघातिन, कोयल को परभृत, साँप को चक्षुश्रवा, चन्द्रमा को सुधाकर या मृगांक नाम अंधविश्वास से ही बने हैं। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे की सहायता करते हैं।

7. भाषाविज्ञान और इतिहास - ये दोनों बहुत ही अधिक सम्बद्ध हैं। इतिहास अपने प्राचीन काल की सामग्री एकत्रित करने के लिए शिलालेखों, ताम्रपत्रों, सिक्कों, पाण्डुलिपियों को पढ़ने व समझने के लिए भाषा की सहायता लेता है। भाषा विज्ञान की लिपि विज्ञान शाखा इस दृष्टि से विशेष उपयोगी है। यही नहीं प्रागैतिहासिक काल के इतिहास में तो उस काल की भाषा के प्राप्त रूप में बड़ी सहायता मिलती है। भाषा विज्ञान पर आधारित प्रागैतिहासिक खोज के सहारे ही मूल भारोपियों के इतिहास पर प्रकाश डाला जा सका है। दूसरी ओर भाषा विज्ञान भी अपने कार्यों में इतिहास से मदद लेता है। संस्कृत में कुछ सुमेरियन, ग्रीक, लैटिन तथा फारसी शब्द मिलते हैं। हिन्दी में कई हजार शब्द तुर्की, अरबी, फरसी पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि के हैं। हिन्दी में क़, ख़, ग़, झ़, फ़, आॅ की ध्वनियों का प्रयोग होने लगा है। हिन्दी वाक्य रचना में मध्ययुग में तथा आजकल (फारसी तथा अंग्रेजी प्रभाव से) बहुत परिवर्तन आए हैं। ऐसी बातों की छानबीन इतिहास विशेषतः राजनीतिक, धार्मिक तथा समाजिक अध्ययन के बिना नहीं की जा सकती।

8. भाषाविज्ञान और भूगोल - हर भाषा एक विशेष भूखण्ड में बोली जाती है। विशेष भौगोलिक परिस्थिति में उसका निर्माण, विकास तथा विस्तार होता है। यही कारण है कि अलग-अलग भौगोलिक परिस्थितियों की भाषाएँ समान नहीं होतीं। शीत प्रधान देश दन्त्य ध्वनियों का उच्चारण या तो कर नहीं पाते या उन्हें मूर्धन्य ध्वनियों के रूप में करते हैं। अंग्रेज तोता जवजं( टोटा) व कलकत्ता को ब्ंसबंजजं (कैलकेटा) कहते हैं। वहीं ऊष्ण प्रदेशों के लोग प्रायः सभी ध्वनियों का उच्चारण कर लेते हैं। कहा जाता है कि आर्य पहले जंगली प्रदेशों में रहते थे तथा ’ऊष्ट्र‘ का अर्थ एक प्रकार का जंगली भैंसा था। बाद में रेगिस्तान में आने से इसका प्रयोग ’ऊँट‘ के लिए होने लगा। धु्रवीय प्रदेश तथा आस-पास की भाषाओं में बर्फ के लिए शब्दों का आधिक्य है। कुछ में तो गिरती बर्फ, जमी बर्फ, पिघलती बर्फ आदि के भी अलग-अलग शब्द हैं, किन्तु अन्य स्थानों की भाषाओं में ऐसा होना संभव नहीं है। इस तरह भाषा और भूगोल का सम्बन्ध स्पष्ट है। भाषा विज्ञान भाषा के सर्वांगीण अध्ययन में इन बातों का पूरा ध्यान रखते हैं। इसके अतिरिक्त भाषा विज्ञान की एक शाखा नाम विज्ञान के लिए भूगोल स्थान नामों, नदी के नामों, पर्वत के नामों आदि के रूप में अच्छी सामग्री देता है। दूसरी ओर प्राचीन भूगोल की सामग्री प्राप्त करने में भूगोल भाषा विज्ञान से बहुत सहायता लेता है। भारोपियों के मूल स्थान की समस्या के बारे में प्रायः यही पद्धति अपनाई जाती है। शब्दों के अध्ययन के आधार पर तत्कालीन भौगोलिक स्थिति और परिस्थिति का पता लगाकर फिर यह अनुमान लगाया जाता है कि वह स्थान कहाँ संभव है ?

9. भाषाविज्ञान और शरीर विज्ञान - शरीर विज्ञान में शरीर के अंगों का अध्ययन किया जाता है और भाषा शरीर के उच्चारण अवयवों से ही उच्चरित होती है और शरीर की श्रवणेन्द्रियों (दोनों कानों ) से ही होती है या सुनी जाती है। इस तरह दोनों सम्बद्ध हैं। भाषा विज्ञान की शाखा ध्वनि विज्ञान की दो शाखाएँ अर्थात् औच्चारणिक ध्वनि विज्ञान तथा श्रावणिक ध्वनि विज्ञान शरीर विज्ञान से बहुत अधिक सम्बद्ध है। इन दोनों का अध्ययन शरीर विज्ञान के बिना किया ही नहीं जा सकता। ध्वनियों का उच्चारण, फेफड़े, स्वर तंत्री, कौआ, मुँह तथा नासिका विवर से होता है। यदि इनमें से किसी में किसी भी प्रकार की खराबी होगी तो वक्ता ध्वनि का उच्चारण ठीक प्रकार से नहीं कर पाएगा। इसी प्रकार कान में कोई खराबी हो तो भाषा ठीक से ग्रहण नहीं की जाएगी। दूसरी ओर शरीर विज्ञान भाषा के सहारे उच्चारण अवयवों और श्रवण अवयवों की खराबी का पता लगा सकता है।

10. भाषाविज्ञान और भौतिक विज्ञान - आधुनिक युग में प्रयोगात्मक ध्वनि शास्त्र के लिए भौतिक शास्त्र ने बड़ी सहायता की है। लैरिंगोस्कोप, काइमोग्राफ, कृत्रिम तालु, एक्स-रे आदि से ध्वनियों के अध्ययन में काफी सहायता मिली है। स्पष्ट रूप में ध्वनिविज्ञान का पूर्ण वैज्ञानिक रूप उपलब्ध करना भौतिक विज्ञान द्वारा ही संभव हो रहा है। अतः भाषा विज्ञान एकांगी भाव से भौतिक विज्ञान में सहायता लेता है।

11. भाषाविज्ञान और तर्क शास्त्र - तर्क तथ्यों का निश्चय युक्तियुक्त प्रकार से करते हैं। भाषा विज्ञान की व्याख्यापेक्षता को तर्क से स्थायित्व मिलता है। यास्क मुनि ने अर्थ विज्ञान विषयक निरुक्त में तर्क प्रणाली को अपनाया है। भाषा विज्ञान की वैज्ञानिकता में तर्क प्रधानता भी एक गुण है और भारतीय तर्कशास्त्र वस्तुतः भाषा के चरम अवयव वाक्य का ही विज्ञान है।

12. भाषाविज्ञान व दर्शन शास्त्र - ग्रीस ने सबसे पहले भाषा का विवेचन दार्शनिकता से किया। वैय्याकरणों का स्फोटवाद, बौद्धों का अपोहवाद, नैय्यायिकों का जातिवाद, मीमांसकों का शब्द नित्यवाद आदि सिद्धान्त दर्शन पर आधारित हैं। वाणी के चार प्रकार - परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी का आधार भी दार्शनिक है। तंत्र शास्त्र शब्द पर आधारित है। वर्णों के विशिष्ट विन्यास द्वारा अतिलौकिक प्रभावों की कल्पना तंत्र शास्त्र में मिलती है। शब्द व अर्थ की यह चर्चा यद्यपि आधुनिक भाषा विज्ञान की सीमा में बहुत दूर तक नहीं आती तथापि इसे सर्वथा निरूपयोगी नहीं माना जा सकता।

13. भाषाविज्ञान और राजनीति शास्त्र - राजनीतिक उथल-पुथल का प्रभाव भाषा पर पड़ता है। राजनीतिक प्रभाव के कारण ही अंग्रेजी, तुर्की, फ्रैंच आदि शब्द भारतीय भाषा में समाहित हो गए। इसी प्रकार चैन्नई का नाम बदल कर मद्रास तथा म्यांमार को बर्मा कर दिया गया था।

14. भाषाविज्ञान और साहित्यालोचन - साहित्य के कला पक्ष में भाषा विज्ञान का महत्त्वपूर्ण कार्य है व भाषा विशेष के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए साहित्य सामग्री प्रस्तुत करता है। भाषा विज्ञान की शैली विज्ञान शाखा आलोचना के क्षेत्र में उपादेय सिद्ध हो रही है।

इस प्रकार ज्ञान की विविध शाखाओं से भाषा विज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है। भाषा विज्ञान को पूरी तरह समझने के लिए इन सब का थोड़ा बहुत ज्ञान आवश्यक है और प्रत्येक शास्त्र या विज्ञान के नियमों, सिद्धान्तों व विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती है।